

सुखकर्ता दुःखहर्ता: गणपते को मराठी आरती

पद 1

सुखकर्ता दुःखहर्ता वार्ता विघ्नाची।
नुरवी पुरवी प्रेम कृपा जयाची।
सर्वांगी सुंदर उटी शेंदुराची।
कंठी झलके माल मुक्ताफळांची॥

टेक (धृपद)

जय देव जय देव जय मंगलमूर्ती।
दर्शनमात्रे मनकामना पुरती॥

पद 2

रत्नखचित फरा तुज गौरीकुमरा।
चंदनाची उटी कुंकुम केशरा।
हिरेजडित मुकुट शोभतो बरा।
गुणझुणती नूपुरे चरणी घागरिया॥

पद 3

लंबोदर पीतांबर फणिवरबंधना।
सरळ सोंड वक्रतुंड त्रिनयना।
दास रामाचा वाट पाहे सदना।
संकटी पावावे निर्वाणी रक्षावे सुरवरवंदना॥

अर्थ, स्रोत और दूसरी आरती-चालीसा: sanatanbodh.in/stotra/sukhkarta-dukhharta/